भजन

तर्ज–सारे शहर में आपसा कोई नही

चौदे तबक में आपसा कोई नही,कोई नही
तेरे सिवा मैं और किसी की होई नही,होई नही

1–मेरा दिल जिसपे फिदा है, वो दिलबर वो महबूब हो तुम
ये हकीकत है धोखा नही है, बारह हजार के खाविंद हो तुम
सब शकों को मिटाकर बेशक कर दिया
देके वाणी हमें सारा सुख दे दिया
पल पल जो बरस रही, हमपे मेहर आपकी होय रही
चौदे तबक में .....

2–हाय अर्श के क्यों इस जिमी पर,सारें भेदों को खोल दिया है
धाम से तो दिखाई जुदायगी, पर यहां दिल को अर्श किया है
ल्याए न्यामत अर्श की पिया तुम यहां,
ऐसी लज्जत कभी भी ना मिलती वहां
लाड किये तुमने बड़े, हमको शिकायत आपसे कोई नही
चौदे तबक में .....

3–मिली वाणी तो सुध आ गयी है,तेरी साहेबी थी ना हमने जानी
दिल उकता गया है जहां से, पिया घर को करो अब रवानी
दिल ना लागे पिया हमारा अब यहां,
तुझे मिलने को रूहें तरसती यहां
ले चलो धाम में,नजरो से ओझल रूहें जहां पर होए नही
चौदे तबक में .....